शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अनिवार्य - पत्र
'निबंधमाला'

शीर्षक – 'आखिर पढ़ने से क्या होता है'

लेखक – प्रो० केसरी कुमार

प्रश्न:- पढ़ाई मनुष्य को भीतर से उसके अपने रूप का स्मरण करा देता है, लेखक के इस कथन पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- प्रो० केसरी कुमार हिन्दी साहित्य के महान चिंतक हैं। उन्होंने अपने प्रसिद्ध निबंध 'आखिर पढ़ने से होता क्या है' में स्पष्ट लिखा है कि पाठक जब पढ़ता है, तो उसके भीतर सोये हुए भाव जगाते रहते हैं। यदि पढ़ाई आदमी को भीतर से उसके रूप का स्मरण न करा दे तो वह पढ़ाई, पढ़ाई नहीं है। पढ़ना एक आत्म स्मृति है।

प्रो० केसरी जी पढ़ने की ही तरह लिखने की अनिवार्यता की बात करते हैं। निबंधकार का कहना है कि रचना एक मजबूरी है। पीड़ा को बाहर निकालने का एक बहाना है, जिसके चलते आनन्द के क्षणों का सृजन होता है। लेखक प्रायः आत्माभिव्यक्ति, आत्मानन्द, सामाजिक दायित्व या विद्रोह के कारण लिखते हैं। हर रचनाकार एक न खत्म होने वाली खोज से ग्रसित होता है और वह हर रचना में अपने आप को एक नये अनुभव के साथ खोजते चलते हैं।

प्रपद्यवादी विचारक लेखक केसरी जी कहते हैं कि पढ़ना केवल अक्षर बोध नहीं है। बल्कि पढ़ी हुई वस्तु को प्रेरणा के रूप में अपने जीवन में उतारना अनिवार्य है। यदि कोई ऐसा करता है तो उसे पढ़ने का लाभ अवश्य मिलता है। हिन्दी साहित्य के महान कथाकार मुंशी-प्रेमचन्द की कहानी मंत्र को पढ़कर तो एक पंजाबी बन्धु ने धीरज के साथ उत्साहित होकर अपना घर-परिवार ही सँवार लिया था।

निबंधकार के अनुसार पढ़ाई का क्षेत्र बहुत व्यापक है। यह ज्ञान केवल पुस्तक अथवा विद्यालय जाने से नहीं मिलता है। सम्पूर्ण संसार ही एक खुली पाठशाला है, समूचा जीवन ही पाठ्यक्रम है। ज्ञान अर्जित करने वाले खेत-खलिहान, चौक-चौराहे कहीं भी ज्ञान प्राप्त हो सकता है। गौतम बुद्ध

शेष आगे –

राजकीय पुस्तकालय छोड़कर बोधि वृक्ष के नीचे जो बैठे थे कि निरंजना के तट पर एक खेतीहर लड़की के गीत से उन्हें ज्ञान मिल गया— 'वीणा के तारों को इतना कड़ा न करो कि वे टूट जाएँ, और इतना ढीला भी न करो कि ध्वनि ही न निकले।'

इस प्रकार लेखक यह कथन बिल्कुल सत्य है कि ज्ञान कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है। किसी से भी प्राप्त किया जा सकता है।

डॉ॰ देवचरण प्रसाद
एसो॰ प्रो॰ हिन्दी
रा॰ऊ॰ सं॰महाविo जुरवसेना, पूर्णियाँ
26|09|20

उसके हृदय को आघात लगता है। वह अपना बलिदान करने को तैयार हो जाता है। मुंशी तोताराम इस स्थिति से निपटने के लिए उसे बोर्डिंग में रहने के लिए भेज देते हैं।

मंसाराम को निर्मला के अभिनव और यथार्थ स्थिति का पता लगता है। उसके हृदय पर गहरा आघात पहुँचता है। इस आघात से वह अपने को सम्हाल नहीं पाता है। अन्त में उसकी मृत्यु हो जाती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद

एसो० प्रो० हिन्दी

रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

26/09/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

दिगंत - भाग - 2 - गद्य भाग

शीर्षक - 'ओ सदानीरा'

लेखक - श्री जगदीशचन्द्र माथुर

प्रश्न: - चम्पारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता के क्या कारण हैं?

उत्तर:- बिहार के चंपारण क्षेत्र में बाढ़ की वीभिषिका से एक विशाल क्षेत्र प्रभावित है। गंडक, मसान, सिकरहना इत्यादि इस क्षेत्र में नदियाँ प्रवाहित होती है। अपने आस-पास हरे-भरे वृक्षों के नयनाभिराम दृश्य के बीच मखमली हरित-कालीन सी उर्वरा भूमि को निरंतर अपने जल से सिंचित करती है। मनुष्य, पशु, पक्षी आदि समस्त प्राणियों की प्यास भी इनके जल से बुझती है, तभी तो लेखक ने उन्हें सम्बोधित किया है "ओ सदानीरा"।

परन्तु, लेखक के कथनानुसार पिछले छह-सात सौ साल से, चंपारण से गंगा तक फैले 'महावन' अर्थात् विस्तृत क्षेत्र में फैले वन के वृक्षों का काटा जाना निरन्तर जारी है। यहाँ वनों की कटाई तेजी से हो रही है। इसके परिणामस्वरूप नदियों के तटों पर पानी का कटाव सदा चलता रहता है। इन नदियों ने अपना धैर्य खो दिया है। अब उनके पानी को रोकना आसान काम नहीं है।

अतः वर्षा ऋतु में हिमालय की ढलान से बहकर आया जल तथा वर्षा का जल बाढ़ की प्रचंडता का कारण बन जाता है। इस त्रासदी को झेलने के लिए यहाँ निवास करने वाले विवश और लाचार हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

26/09/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अष्टम – पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक – मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न:- 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा का शेष अंश –

उत्तर:- निर्मला की चिता में आग लगाकर मानो उपन्यासकार कुत्सित दहेज-प्रथा और वृद्ध-विवाह की प्रथा को भस्म कर देने का सन्देश देता है। कथानक का समापन करुणांत है। कथानक में एक साथ कई आत्म-हत्याएँ और मृत्युएँ होती हैं। इससे कथानक अतिरंजित लगने लगता है।

'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु का संगठन औपन्यासिक है। इसमें दो कहानियाँ गूँथी हुई हैं- मुख्य कथा निर्मला की है। पहली सहायक कथा सुधा की है। दूसरी सहायक कथा कृष्णा की है।

बाबू उदयभानु अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए निर्मला की शादी घर फूँक की नीति अपनाकर करने को उद्यत हो जाते हैं। फिर फिजूलखर्ची पर अपनी पत्नी से तकरार हो जाती है और बाबू उदयभानु घर छोड़कर रात्रि में निकल पड़ते हैं। एक व्यक्ति जिसे उन्होंने सजा कराई थी, अँधेरे में प्रहार कर उनका काम तमाम कर देता है। निर्मला की माँ कल्याणी विवश होकर उसका विवाह तीन पुत्रों का पिता वृद्ध मुंशी-तोताराम से कर देती है। मुंशी तोताराम के पुत्र मंसाराम, जियाराम और सियाराम हैं। मंसाराम सोलह वर्ष का किशोर है। परिवार में मुंशी तोताराम की विधवा बहिन भी रहती है। निराश निर्मला को मुंशी तोताराम से अतिशय प्यार और सम्मान मिलता है, परन्तु निर्मला की उदासिनता यथावत् बनी रहती है। उसे ननद रुक्मिणी के व्यंग्य-बाणों का भी सामना करना पड़ता है। निर्मला मंसाराम से अँग्रेजी पढ़ती है और उसे पुत्रवत् सहज स्नेह करती है। परन्तु मुंशी जी इसे सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। निर्मला मुंशी जी के विचारों को भाँपकर मंसाराम के साथ क्रूरता का का व्यवहार करती है। किशोर हृदय मंसाराम यथार्थ स्थिति को नहीं समझ पाता है।

शेष आगे–